

DPN 6956

Title : कलशाचन पूजा KALASARCANA PŪJĀ

Run. No. 7681

Cat. No.

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms.

Folios 5

Lines (in a page) 14

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / ☒ thyaśaphu /

Condition : ☒ fine / ☐ damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

कलशादि आभिषेक वन्दनादि आशीर्वादि विधय ॥

P.T.O.

१वते सं म्माय विधि जुहो ।

१वते गम्भध्यानं ॥

क॥ धर्मगुरुवाच॥

सूथनामकनल

लक्ष्मदिसकतां व.

योऽब्रवीत् ॥ ५८ ॥

उत्त॥ अ॥ य॥ य॥ ज॥ म॥

नस्य योऽयं योऽयं वा॥

यूयोआनादेगनाः

मकरलक्ष्मण

नकुलः शुभः नयूजाः

निमित्तार्थकमउल

यूय हाऊन समर्थ

नधूनदावा॥ कलमः

यक मधिवृत्त्या

त्यातं काय यत्र य

यात वृत्त्या विरयक मि

ह्यात मधिविरयक

॥ यत्र धूनदाव सिद्धं

सुखा उं सा ४ रु ल ॥ आ

यति उं ग आ सि ॥ सक

स्यानं ता य हा ला उं म

नो रु ति ॥ यति हा ॥ दः

हि मा ॥ बोचनं कलम

दिश्रुति यक च च नाः

विश्रुती द्वाद विरय

शंनिपु विरय विरय विरय

इस नम्रया यूरुचंद

निरं ॥ श्री सूर्य सावि

थया थन सूर्य काय

॥ यत्र संया य विरिद्ध

या ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ सै को तिथी वार य

ता कृ ता फा शे वे गु

रोत्रे च मि व द्वा वा

मः सौ व्या प हो मे श

शिय उप हो वे प्रा ण

र्य नां शो दि वि चू त

ले च ॥ ॥ सु य भा त

त्रि ने च डे सूर्य विरु

ॐ ध्यायतां प्रादुस्तु ॥ ॐ
याः ॐ ध्यायतां ४ पूर्वजा
तदवस्थं प्रियं गन्तुं
नाः ॥ मननेन वदन्तु
महर्षिणा तं ध्यायन्ति
सकृद्वै ॥ ॥ वाचक
सुं ध्यामि प्रादुस्तु सुं ध्या
मि चतुस्तु सुं ध्यामि ॥ ॐ
यंतं सुं ध्यामि नारिंतं
सुं ध्यामि मरुंतं सुं ध्या
मि पायंतं सुं ध्यामि चरि
यांतं सुं ध्यामि ॥ मनस्तु
आप्यायतां वाक्कुआ

प्यायतां प्रादुस्तु आ
प्यायतां चतुस्तु आः
प्यायतां ॐ ॥ ॐ यंतं
आप्यायतां माचरुक्
यंतं दक्षिंतं गस्तु आ
प्यायतां निष्ठायतां त
रुस्तु ध्यातुं मदायः
ॐ ध्यायतां स्वस्वधि
तमेन ॐ हि ॐ सीः ॥
ॐ यवि यस्तु ॥ ॐ त
स्यतं यवि यस्तं यवि
यस्तं स्यात्कामः ॥ पु
नस्तु कस्तं यस्तं ॥ ॥

१५८ दानविषयपत्र
नमो भगवते ॥ ५५
दत्तानन्द ॥ यद्यद
यादव नमो भगवते ॥
चूनचाक ॥ ५५ १८
दक्षिणतय ॥ सदा ॥
काग ॥ लखनवा ॥
ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ यद
यक ॥ ॐ लयविष्टा
॥ ॐ यहापवीगो ॥ ॐ
या ४ रुलीनी ॥ ॥
जय ॥ यजमानसावा
प्रसन्नग्री ॥ स्वसुद
वतापीति पूर्वकच

सिउ आतन

वन्दनं ॥ जलपदी
॥ यष्टी ॥ मगविशः
उल्लिखितं वन्दनादिः
स्वस्त्युक्तं ॥ दीप ॥
आदित्योत्पत्त्यात्
१२ ॥ अथ अदि
॥ इति नारायणवन्दना
क ॥ १२ ॥ अथ विष्णु
॥ दक्षिणाय
क ॥ १२ ॥ अथ
नारायणाय ॥ ३
उदयनी ॥ वानाः

सर्वलक्षणनाय ॥ ३
यविष्णु ॥ वन्दनादि
काय ॥ कुरुन सचन
स्नानविश ॥ ३ गङ्गा
स्थाषकीनी गङ्गावेन
स्यगीताम् ॥ गङ्गाविष्णु
स्यतुतस्य ॥ अथ अदि
जुवा मरि ॥ ॥ सादि
थाय ॥ यजमाना गङ्गा
अनस्य पूर्वार्थकतक
मल्लसादि ॥ अथ सु
ययिजुर्धनमष्टवृक्ष

उत्तमो विदुः ८

नमः॥ यि स्वा लखू स
दू न हा य क ल का य
दू हा या व हा य॥ १२॥
व ना व ना थ स हा य मा
ल॥ ॥ त ल स स ह सिः
का स न स ह क रु क
यू व स व क॥ सि दू नः
का य क॥ द त सा व नू
य न॥ स द सा थ का लि
न कि नि न॥ स ग न वि
य क व सु दि॥ ॥ वा
क्र म यू जा थ का लि न

सि व स रू ॥ ३ श्री ग न ३

वा क्र म यू जा ति मि ल य थ ३

॥ अ य ॥ य ज मा न स य
ग वा यो गी ग क र्माः
न स गी ग स य र्मा थ श्री
सूर्यो द य न म ॥ मा हा
ध कान॥ य दू व दायः
दू द मा स न न म ॥
सा दि या द य ह हा य
व द न य स य व न व
य धू व द य र्मा ॥ अः
रि स वा दि अ गि र वा
ह थ॥ स ग न व लि
स थ ना व ना य र ति न

श्री ग न ३